* Naari Vimarsh aur Saamajik Samarasata- "Yogyatha" International Reffered Research Journal-ISSN-2348-4225- April-June 2022.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आजादी का अमृत महोत्सव के सु अवसर पर

उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान, लखनऊ के व्दारा प्रायोजित

उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान

TWO DAY NATIONAL CONFERENCE ON

समकालीन कविता में सामाजिक समरसता और मानवमूल्य

SOCIAL HARMONY & HUMAN VALUES IN CONTEMPORARY POETRY

సమకాలీన కవితలలో సామాజిక సమరసత మరియు మానవ విలువలు

CERTIFICATE

This is to Certify that Dr./Mr./Ms. A. Swathi, Lecturer in Hindi A.S.D. Women's College, KKD *participated/presented a paper/delivered keynote address/chaired Technical Session on* "नारी विमर्श और सामाजिक समरसता" *in the* **NATIONAL CONFERENCE** *entitled* **Social Harmony & Human Vaues in Contemporary Poetry** *will be held from 22nd to 23rd July 2022, Organized by* **Department of Hindi with Telugu & English,** *Pithapur Rajah's Govt. College (A), Kakinada, Andhra Pradesh, INDIA.*

Dr. Rajnarayan Sukla	Sri P.V. Krishna Rao	Dr. P. Hari Ram Prasad	Dr. B.V. Tirupanyam
Chairman, Uttarapradesh Basha Samsthan	Co-convenor	Convener	Principal

PITHAPUR RAJAH'S GOVERNMENT COLLEGE

An Autonomous & NAAC Accredited "A" Grade Institution (CGPA-3.17)

(Affiliated to Adikavi Nannaya University, Rajahmahendravaram)

Raja Ram Mohan Roy Road, KAKINADA- 533 001.

Tel : 0884-2379489, Fax : 0884-2387888, Email: kakinada.jkc@gmail.com, Website: www.prgc.ac.in

योग्यता

अन्तरराष्ट्रीय त्रैमासिक शोध पत्रिका

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आजादी का अमृत महोत्सव के तु अवसर पर
उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान, लखनऊ के व्दारा प्रायोजित

TWO DAY NATIONAL CONFERENCE PROCEEDINGS

समकालीन कविता में सामाजिक समरसता और मानवमूल्य

SOCIAL HARMONY & HUMAN VALUES IN CONTEMPORARY POETRY

సమకాలీన కవితలలో సామాజిక సమరసత మరియు మానవ విలువ

कार्यकारी संपादक :

डॉ. हरि राम प्रसाद पसुपुलेटी

Volume : 1 Edition : April - June 2022 ISSN : 2348 - 4225

- Social Sciences • Humanities
- Commerce & Management
- Language and Literature
- Law • Art • Development Studies

Yogyatha

International Referred Research Journal

Editor : Dr. D. Satya Latha

अनुक्रम

क्रम सं	विषय	नाम
1	समकाालीन कविता में सामाजिक समरसता और मानव मूल्य ः	प्रो आर एस सर्राजु
2	सामाजिक समरसता के प्रतीक महान संत कवि कबीर ः	प्रो एन सत्यनारायण
3	अंबेडकर और सामाजिक समरसता ः	डॉ जि वी रत्नाकर
4	समकालीन कविता मे अभिव्यत्त मानव मूल्य ः	डॉ पी के जयलक्ष्मी
5	संत कवियों की सामाजिक समरसता ः रज्जव वाणी के संदर्भ में	डॉ के नीरजा
6	संत साहित्य और मानव मूल्य ः	डॉ शेक वेनजीर
7	सामाजिक समरसता के घटक ः	एन हरि प्रसाद
8	संत कविता में सामाजिक समरासताा की भावना ः	पी उषा लावण्य, सि एच सुनीलकुमार
9	समकालीन हिन्दी कविता में मानमूल्य ः	डां वै वेंकट लक्ष्मी
10	समकालीन कविता और मानवमूल्य ः	सादी सुरेंद्र
11	समकालीन काव्य में सामाजिक जीवन का स्वरूप	डॉ वी लक्ष्मी
12	नारी विमर्श और सामाजिक समरसता	वासा उमाज्योति
13	हिन्दी उपन्यासों में मानवमूल्य की अभिव्यक्ति	डॉ एस सुभाषिणी
14	नारी विमर्श और सामाजिक समरासता	ए स्वाति
15	दलित कविता और सामाजिक समरसता	एन वि एन वी गणपतिराव
16	साहित्य और समाज	डॉ एम रामनथम, रवींद्र राथोड
17	समकालीन कविता और सामाजिक समरासता	एस के शर्मिला
18	साहित्य और मानवमूल्य ः	एस रम्या
19	नारी विमर्श और सामाजिक समरासता	वि रेवति
20	समकालीन कहानियों में दलित नारी	डॉ एन वेंकट रमण
21	समाजिक समरसता के जनक डॉ वावासाहेव अंवेडकर	डॉ पी हारिराम प्रसाद, डॉ के गौतम
22	नारी विमर्श और सामाजिक समरासता	मुंताज वेगम
23	हिन्दी साहित्य में मानवमूल्य	डॉ वि सरोजिनी

नारी विमर्श और सामाजिक समरसता

ए.स्वाति
हिंदी प्राध्यापक,
ए.एस.डी गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज(w),(A),
काकिनाडा, आंध्र प्रदेश.
फोन 8331959528: e-mail – swathigorgeous007@gmail.com.

सामाजिक समरसता का अर्थ है, सामाजिक समानता अर्थात जातिगत भेदभाव एवं अस्पृश्यता का जड़ मूल से उन्मूलकर लोगों में परस्पर प्रेम एवं सौहार्द बढ़ाना । ऐसे सामाजिकसमरसताकेलिए स्त्री पुरुष समानता अत्यंत आवश्यक चीज है।अगर हम महिलाओं की आज की अवस्था को पौराणिक समाज की स्थिति से तुलना करें तो यह तो साफ दिखता है कि हालत में कुछ तो सुधार हुआ है, महिलाएं नौकरी करने लगी हैं, घर के खर्चों में योगदान देने लगी हैं, कई क्षेत्रों में तो महिलाएं पुरुषों से आगे निकल गई है। दिन प्रतिदिन लड़कियां ऐसे कीर्तिमान बना रही हैं जिस पर ना सिर्फ परिवार या समाज को बल्कि पूरा देश को गर्व महसूस कर रहा है।

आज अगर महिलाओं की स्थिति की तुलना सैकड़ों साल पहले के हालत से की जाए तो यही दिखता है, महिलाएं पहले से कहीं ज्यादा तेज गति से अपने सपने पूरे कर रहे हैं पर वास्तविक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो महिलाओं को समाज की बेड़ियां तोड़ने में अभी भी काफी लंबा सफर तय करना है आज भी समाज की भेदभाव की नजरों से बचना महिलाओं के लिए नामुमकिनहो रहाहै।

महिलाओं को जन्म के बाद से ही समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है । अपने अधिकारों, समाज की रूढ़ियों, और अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ना महिला सशक्तिकरण का दर्द है। शिक्षा के माध्यम से पेशेवर स्थान पर महिलाओं को प्रोत्साहित करना, उनकी राय को स्वीकार करना,

और उन्हें वह अधिकार प्रदान करना जो वे चाहे। महिलाओं को किसी ऐसे व्यक्ति के साये के पीछे नहीं रहना चाहिए जो खुद को अभिव्यक्ति ना कर सके। महिला सशक्तिकरण का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को दूसरों से आगे निकलने और समाज में समान अधिकार प्राप्त करने का मौका देना है।

प्रस्तावना

सामाजिक समरसता के लिए नारी सशक्तिकरण अत्यंत आवश्यक है। स्त्री मुक्ति, स्त्री चेतना, और शिक्षित श्री ये सब में से सशक्तिकरण क्या है?निर्बलको सबल बनाने का प्रयास सशक्तिकरण है? या शोषण के विरुद्ध आवाज उठाना सशक्तिकरण है? महिला सशक्तिकरण का असली अर्थ है महिला को आत्म सम्मान, आत्मविश्वास प्रदान करना अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने का स्वतंत्र मिलना यदि कोई महिला अपने अधिकारों के बारे में सजग है, यदि उसका आत्मसम्मान बड़ा हुआ तो वह सशक्त होती है तब समाज में समरसता स्थापित होती है।

आलेख का मुख्य भाग

सामाजिक समरसता में महिला शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत के ग्रामीण इलाकों में आज भीमहिलाओं को उनके शिक्षा के अधिकार से वंचित किया जा रहा है। शिक्षा बाल विवाह को भी कम करेगी जो अभी भी कुछ हिस्से में प्रचलित हैं और अधिक जनसंख्या को नियंत्रित करने में मदद करता है। सरकार ने महिलाओं की शिक्षा के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए वर्षों से कई योजनाएं शुरू की हैं जैसे कि सर्वशिक्षा अभियान, ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड, बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ और बहुत कुछ शिक्षा महिलाओं को अच्छे और बुरे की पहचान करने, उनके दृष्टिकोण, सोचने की तरीके और चीजों को संभालने के तरीके को बदलने में मदद करती हैं। अन्य देशों की तुलना में भारतीय महिलाओं की साक्षरता दर कम है। शिक्षा सभी का

मौलिक अधिकार है और किसी को भी शिक्षा के अधिकार से वंचित नहीं किया जाना चाहिए। शिक्षा जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करती है। घरेलू हिंसा या यौन उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाने का आत्मविश्वास बदलाव का हिस्सा बने और शिक्षा की मदद से एक महिला को सशक्त बनाएं।

लैंगिक समानता भी विश्व स्तर पर एक प्रमुख चिंता का विषय है। लैंगिक समानता दोनों लिंगों को शिक्षा के सामान और समान संसाधन प्रदान करने से शुरू होती हैं। बालिकाओं की शिक्षा भी प्राथमिकता होनी चाहिए ना कि केवल एक विकल्प। एक शिक्षित महिला अपने और अपने आसपास के लोगों के लिए बेहतर जीवन का निर्माण करने में सक्षम होगी। समाज में महिलाओं के विकास के लिए लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण आवश्यक है। महिला सशक्तिकरण सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक महिला को शिक्षा प्राप्त करने, पेशेवर प्रशिक्षण प्राप्त करने और जागरूकता फैलाने का अवसर मिले। हालांकि लिंग गुणवत्ता सुनिश्चित करेगी कि संसाधनों तक पहुंच दोनों लिंगों को समान रूप से प्रदान की जाएं और समाज भागीदारी सुनिश्चित की जाए। यहां तक पेशेवर स्तर पर भी महिलाओं को लैंगिक असमानता का सामना करना पड़ता है।

नारी आंदोलन और नारी विमर्श से अगर हम तुलना करते हैं तो कई बार हमारे सामने योग्य विद्वान हिंदुस्तान के परिप्रेक्ष्य में नारी संघर्ष की उपेक्षा की जा सकती हैं। इसके साथ साथ जितना कष्ट नारी ने हिंदुस्तान में झेला हैशायद ही किसी और मुल्क में झेला होगा। हिंदी केविमर्शात्मक लेखन पर भी इसी तरह का एक खास नजरिया चस्पा दिया है। और उसका मूल्यांकन चंद्र लेखिकाओं ने अपने ग्रंथों के आधार पर बनाया है और उसका यह एक सामान्य निष्कर्ष निकाला दिया है। बदलते समय में अनेक नारी से मिलते-जुलते अनेक सवाल आकर हमने चारों ओर से घेर रहे हैं। आज भी समाज रूपी कटघरे में खड़ा किया हुआ है। जो चिंता का विषय बना हुआ है। ऐसे में हिंदुस्तान के नारी संघर्ष के इतिहास को पुनः दोहराया जा रहा है।

हमने इस पर दोबारा से विचार करने की जरूरत है। दोनों एक दूसरे पर निर्भर है इसलिए किसी एक मुल्क में किसी खास वजह से चलने वाले नारी संघर्ष एकमात्र सार्वभौमिक सच नहीं हो सकता है।

समकालीन युग में नारीवाद, नारी अस्मिता, नारी विमर्श, नारी सशक्तिकरण जैसे सभी विषय विश्वव्यापी मुद्देहै। पुरुष प्रधान समाज में स्त्री मुक्ति, नारी स्वतंत्रता का तय, उनके अधिकारों को लेकर चाहे कितना भी बड़े दावें किए जाएं सब व्यर्थ है। जब तक नारी स्वयं इस बात को नहीं समझती तब तक उसकी प्रगति हो ही नहीं सकती, नारी को समाज में सुरक्षा कैसे मिले? इससे बेहतर यह है कि वह सुरक्षित कैसे बने।

निष्कर्ष

पुरुष और नारी समाज की दो मूलभूत इकाइयां हैं। दोनों के संयोग से समाज का सृजन होता है और सामाजिक समरसता भी। जब स्त्री अपने समाजिक परिवेश में अपने हिसाब से स्वतंत्र जीवन जी सकती हैं, तब वह परिवार और समाज में अपने अस्तित्व रख सकती हैं। सही समर्थन दिए जाने पर महिलाओं ने हर क्षेत्र में शानदार प्रदर्शन कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

• हिंदुस्तान में नारी विमर्श और नारी संघर्ष- मनजीत सिंह.

• डॉ. रेखा सेथी- इंद्रप्रस्थ महिला महाविद्यालय- न्ईदिल्ली - सुशीला टाकभौरे की कविताओं में दलित एवं स्त्री पक्ष.

• शंकजे का दर्द- दलित एवं नारी मुक्ति का यथार्थदस्तावेज- प्रथम संस्मरण-नईदिल्ली(२०११).